कृषि नवाचार
ISSN: 3048-6092
https://www.krishinavachar.in
खण्ड 02 भाग 12 मार्च, 2026

किसान क्रेडिट कार्ड योजना का आर्थिक मूल्यांकन

वीणा राठौर[1*]
[1]सहायक प्रोफेसर (अनुबंधात्मक शिक्षक), कृषि अर्थशास्त्र विभाग, कैलाश नाथ काटूज उद्यानिकी कॉलेज, मन्दसौर, राजमाता विजयाराजे कृषि विश्वविद्यालय, (म.प्र.)
***E-mail: vrathore137@gmail.com**

भारत एक कृषि प्रधान देश है जहाँ लगभग 60% आबादी कृषि से जुड़ी हुई है। कृषि संचालन के लिए समय पर और सस्ता वित्तीय साधन उपलब्ध होना अत्यंत आवश्यक है। इसी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए भारत सरकार ने Kisan Credit Card Scheme (KCC) की शुरुआत की। यह योजना किसानों को त्वरित, आसान और कम ब्याज दर पर ऋण उपलब्ध कराती है ताकि वे समय पर कृषि उत्पादक गतिविधियों जैसे बीज, उर्वरक, कीटनाशक, सिंचाई, श्रम आदि पर खर्च कर सकें।

किसान क्रेडिट कार्ड परिचय

किसान क्रेडिट कार्ड एक डिज़ाइन-आधारित ऋण साधन है, जिसमें किसानों को एक निश्चित सीमा तक क्रेडिट तक पहुँच दी जाती है। इस ऋण का उपयोग मौसमी कृषि, निवेश और पूंजीगत जरूरतों के लिए किया जा सकता है। KCC का प्रमुख लक्ष्य है। किसानों को सस्ते और समय पर ऋण की उपलब्धता सुनिश्चित करना।

योजना के प्रमुख तत्व

1. आसान पात्रता और आवेदन
2. एकल कार्ड से बार-बार ऋण उठाने की सुविधा
3. न्यूनतम ब्याज दर (बैंक दर से सब्सिडी)
4. लचीला पुनर्भुगतान समय
5. ऋण पुनर्भुगतान में देरी पर अनुकूल व्यवस्था

आर्थिक मूल्यांकन

1. ऋण तक पहुँच: KCC योजना से किसानों को बैंकिंग चैनल से ऋण प्राप्त करना आसान हुआ है। पारंपरिक साहूकारों पर निर्भरता कम हुई है, जिनसे उच्च ब्याज दर पर ऋण लेना पड़ता था।

- उच्च ब्याज कर्ज़ का बोझ कम हुआ।
- समय पर ऋण उपलब्धता बनी।
- औपचारिक वित्तीय समावेशन को बढ़ावा मिला।

इससे कृषि निवेश का स्तर बढ़ा और किसानों ने उन्नत इनपुट अपनाने की क्षमता पाई।

2. आय और उत्पादन पर प्रभाव: KCC से प्राप्त ऋण का उपयोग कृषि गतिविधियों में होता है:- जैसे उन्नत बीज, उर्वरक, मशीनरी, सिंचाई सुविधा आदि।

इसका सकारात्मक प्रभाव:

a) उन्नत कृषि तकनीक अपनाने में मदद
b) उत्पादन में वृद्धि
c) लागत नियंत्रण
d) समय पर खेती संचालन

3. जोखिम प्रबंधन में भूमिका: फसल विफलता, मौसम जोखिम, बाज़ार अस्थिरता:- ये कृषि के प्रमुख जोखिम हैं। यदि किसान के पास पर्याप्त ऋण न हो तो वह जोखिम से अच्छी तरह निपट नहीं पाता।

KCC योजना:

a) जोखिम को कम करती है
b) समय पर ऋण देकर कृषि गतिविधि को जारी रखने में मदद करती है
c) ऋण अवधि में लचीलापन देती है

4. दीर्घकालिक निवेश और तकनीकी अपनाने में प्रभाव: KCC से प्राप्त वित्तीय सहायता कृषि में नई तकनीकों और संसाधनों में निवेश करने के लिए उपलब्ध होती है:- जैसे ड्रिप सिंचाई, मल्चिंग, फसल विविधीकरण, उन्नत कृषि उपकरण। इससे दीर्घकालिक उत्पादन क्षमता और कुशल संसाधन उपयोग को बल मिला है।

लागत–लाभ विश्लेषण

विश्लेषण बिंदु	लाभ	लागत / चुनौती
ऋण उपलब्धता	तीव्र, सस्ता ऋण	बैंकिंग प्रक्रियाओं की देरी
उत्पादन	अधिक उत्पादन	मौसम जोखिम
ऋण पुनर्भुगतान	लचीला पुनर्भुगतान	पुनर्भुगतान में कठिनाई – जोखिम
वित्तीय समावेशन	बढ़ी वित्तीय पहुँच	जागरूकता की कमी
कुल आय	बढ़ी किसान आय	ऋण की अनुशासनहीनता

चुनौतियाँ और सीमाएँ

1. आवेदन प्रक्रिया में कठिनाइयाँ: कई किसानों को दस्तावेज़, पासबुक, भूमि रिकॉर्ड आदि प्रदर्शित करने में कठिनाई होती है।

ISSN: 3048-6092
https://www.krishinavachar.in
खण्ड 02 भाग 12 मार्च, 2026

2. समयबद्ध ऋण वितरण नहीं होना: कभी-कभी ऋण का समय पर वितरण नहीं होने से किसानों को परेशानी होती है।
3. पुनर्भुगतान कठिनाइयां: किसानों के लिए मौसम संबंधी जोखिम और उत्पादन कम होने पर ऋण पुनर्भुगतान एक चुनौती बन जाता है।
4. जागरूकता और बैंक नेटवर्क की कमी: विशेषकर दूरस्थ ग्रामीण क्षेत्रों में किसानों को KCC योजनाओं के बारे में पर्याप्त जानकारी नहीं मिल पाती।

नीति सुझाव

1.डिजिटलाइजेशन और ऑनलाइन आवेदन:- जल्द और पारदर्शी प्रक्रिया
2. संवर्धित बैंकिंग नेटवर्क:- ग्रामीण शाखाओं का विस्तार
3. शिक्षा और प्रशिक्षण कार्यक्रम:- वित्तीय साक्षरता पर जोर
4. लचीले पुनर्भुगतान विकल्प:- मौसम वास्तविकता के अनुसार
5. न्यूनतम ब्याज अधिभार:- विशेषकर सीमांत किसानों के लिए

निष्कर्ष

किसान क्रेडिट कार्ड योजना ने भारत में कृषि ऋण प्रणाली में क्रांतिकारी बदलाव लाया है। इस योजना के कारण किसानों को समय पर, सस्ते और लचीले ऋण की उपलब्धता सुनिश्चित हुई है जिससे कृषि निवेश, उत्पादन तथा आय में सकारात्मक वृद्धि हुई है। यद्यपि चुनौतियाँ मौजूद हैं:- जैसे आवेदन प्रक्रियाओं की जटिलता, पुनर्भुगतान जोखिम और जागरूकता की कमी। इनका समाधान नीतिगत सुधारों और तकनीकी नवाचार से संभव है।